



# Kishan Dev

01 Feb 1948

04:50 AM

Una

Model: Web-MyKundli

Order No: 121176001

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

**Acharya Surender KumarJoshi**

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

लिंग \_\_\_\_\_: पुल्लिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 31-01/02/1948  
दिन \_\_\_\_\_: शनि-रविवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 04:50:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 53:47:15 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Una  
राज्य \_\_\_\_\_: Himachal Pradesh  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 31:28:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 76:19:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: -00:24:44 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 04:25:16 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: -00:13:25 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 13:05:39 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 07:19:06 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 17:57:17 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 10:38:12 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: उत्तरायण  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: दक्षिण  
ऋतु \_\_\_\_\_: शिशिर  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 17:52:54 मकर  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 07:48:20 धनु

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: धनु - गुरु  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: तुला - शुक्र  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: चित्रा - 4  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: मंगल  
योग \_\_\_\_\_: शूल  
करण \_\_\_\_\_: विष्टि  
गण \_\_\_\_\_: राक्षस  
योनि \_\_\_\_\_: व्याघ्र  
नाड़ी \_\_\_\_\_: मध्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: शूद्र  
वश्य \_\_\_\_\_: मानव  
वर्ग \_\_\_\_\_: मृग  
युँजा \_\_\_\_\_: मध्य  
हंसक \_\_\_\_\_: वायु  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: री-रीतेश  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: स्वर्ण - रजत  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: कुम्भ

**Acharya Surender KumarJoshi**

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1869	माघ	12
पंजाबी	संवत : 2004	माघ	19
बंगाली	सन् : 1354	माघ	18
तमिल	संवत : 2004	थई	19
केरल	कोल्लम : 1123	मकरम	18
नेपाली	संवत : 2004	माघ	19
चैत्रादि	संवत : 2004	माघ	कृष्ण 7
कार्तिकादि	संवत : 2004	पौष	कृष्ण 7

### पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 6  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 18:43:40  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 7  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : हस्त  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 08:00:15 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : चित्रा  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : धृति  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 18:19:48 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : शूल  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : गर  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 07:22:50 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : विष्टि  
भयात \_\_\_\_\_ : 52:04:25  
भभोग \_\_\_\_\_ : 58:57:07  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : मंगल 0 वर्ष 9 मा 19 दि

### घात चक्र

मास \_\_\_\_\_ : माघ  
तिथि \_\_\_\_\_ : 4-9-14  
दिन \_\_\_\_\_ : गुरुवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : शतभिषा  
योग \_\_\_\_\_ : शुक्ल  
करण \_\_\_\_\_ : तैतिल  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 4  
वर्ग \_\_\_\_\_ : सिंह  
लग्न \_\_\_\_\_ : कन्या  
सूर्य \_\_\_\_\_ : कन्या  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : धनु  
मंगल \_\_\_\_\_ : तुला  
बुध \_\_\_\_\_ : कर्क  
गुरु \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
शुक्र \_\_\_\_\_ : धनु  
शनि \_\_\_\_\_ : सिंह  
राहु \_\_\_\_\_ : मकर

**Acharya Surender KumarJoshi**

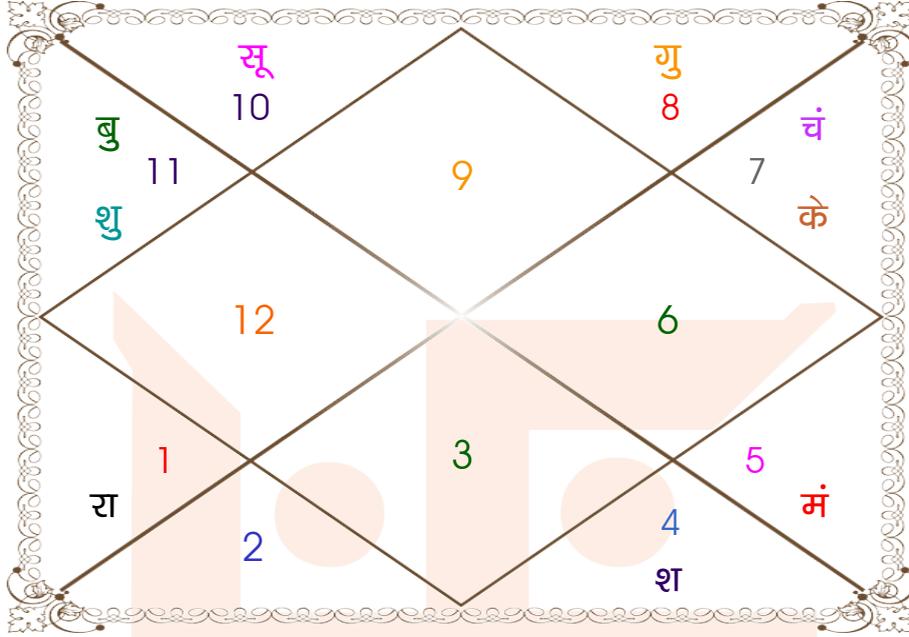
VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

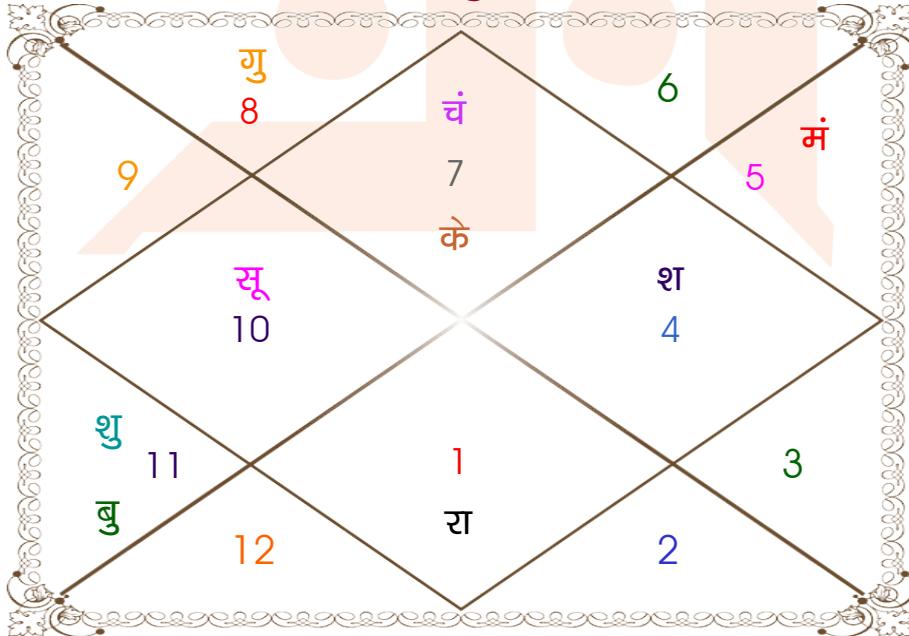
surenderjoshi70@gmail.com

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



**Acharya Surender KumarJoshi**

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

## लग्न कुण्डली और दशा

### लग्न कुंडली

	रा		
शु बु			श
सू			मं
ल	गु	के चं	

### लग्न कुंडली

	रा	
		शु बु
श		सू
मं	चं के	ल गु

विंशोत्तरी  
मंगल 0वर्ष 9मा 19दि  
मंगल

01/02/1948

21/11/2061

मंगल	20/11/1948
राहु	21/11/1966
गुरु	21/11/1982
शनि	21/11/2001
बुध	21/11/2018
केतु	21/11/2025
शुक्र	21/11/2045
सूर्य	21/11/2051
चन्द्र	21/11/2061

योगिनी

मंगला 0वर्ष 1मा 11दि  
भामरी

14/03/2025

14/03/2029

भामरी	23/08/2025
भद्रिका	14/03/2026
उल्का	13/11/2026
सिद्धा	24/08/2027
संकटा	13/07/2028
मंगला	23/08/2028
पिंगला	12/11/2028
धान्या	14/03/2029

**Acharya Surender KumarJoshi**

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

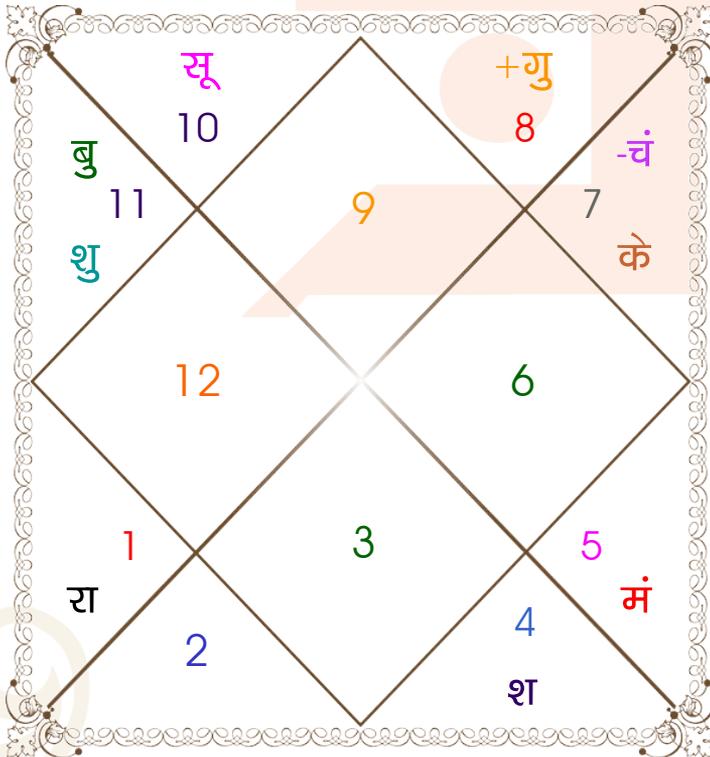
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न		धनु	07:48:20	333:07:13	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	---
सूर्य		मक	17:52:54	01:00:54	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	बुध	शत्रु राशि
चंद्र		तुला	05:08:04	13:23:29	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	सूर्य	सम राशि
मंगल	व	सिंह	10:53:38	00:17:59	मघा	4	10	सूर्य	केतु	शनि	मित्र राशि
बुध		कुंभ	05:28:14	01:21:47	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	सूर्य	सम राशि
गुरु		वृश्चि	28:13:03	00:10:55	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	शनि	मित्र राशि
शुक्र		कुंभ	23:49:04	01:12:49	पू०भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	शनि	मित्र राशि
शनि	व	कर्क	26:46:26	00:04:48	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	गुरु	शत्रु राशि
राहु	व	मेष	26:25:50	00:00:53	भरणी	4	2	मंगल	शुक्र	केतु	शत्रु राशि
केतु	व	तुला	26:25:50	00:00:53	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	केतु	सम राशि
हर्ष	व	वृष	29:20:11	00:01:27	मृगशिरा	2	5	शुक्र	मंगल	शनि	---
नेप	व	कन्या	19:46:56	00:00:34	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	केतु	---
प्लूटो	व	कर्क	20:42:25	00:01:25	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	शुक्र	---
दशम भाव		कन्या	24:40:06	--	चित्रा	--	14	बुध	मंगल	राहु	--

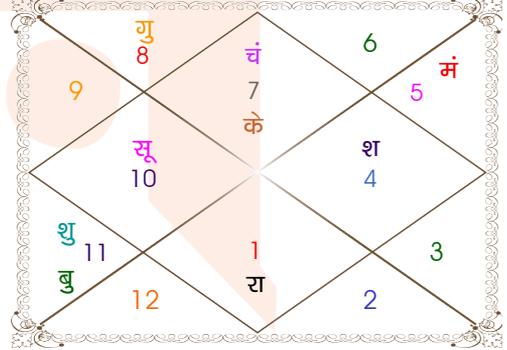
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:07:43

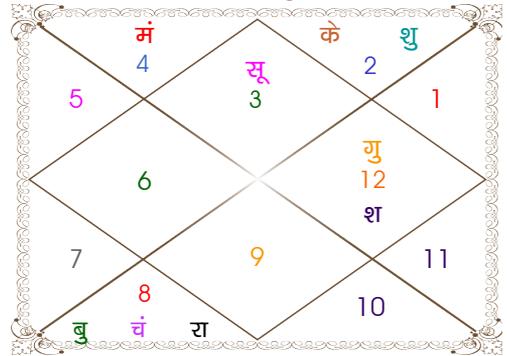
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



**Acharya Surender KumarJoshi**

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृश्चिक 25:36:57	धनु 07:48:20
2	धनु 25:36:57	मकर 13:25:35
3	कुम्भ 01:14:13	कुम्भ 19:02:51
4	मीन 06:51:28	मीन 24:40:06
5	मेष 06:51:28	मेष 19:02:51
6	वृष 01:14:13	वृष 13:25:35
7	वृष 25:36:57	मिथुन 07:48:20
8	मिथुन 25:36:57	कर्क 13:25:35
9	सिंह 01:14:13	सिंह 19:02:51
10	कन्या 06:51:28	कन्या 24:40:06
11	तुला 06:51:28	तुला 19:02:51
12	वृश्चिक 01:14:13	वृश्चिक 13:25:35

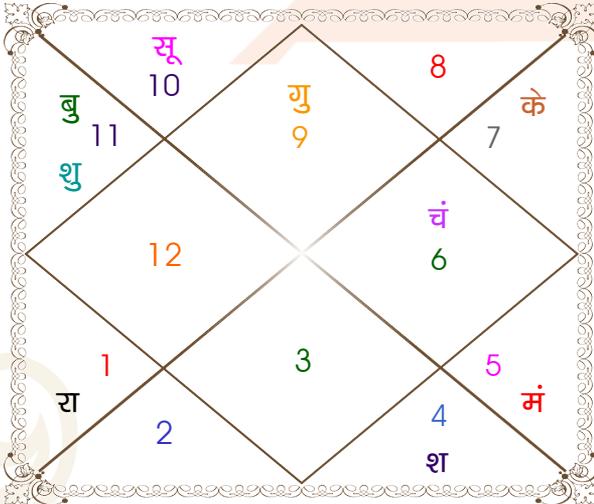
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	धनु	07:48:20
2	मकर	12:53:54
3	कुम्भ	20:42:12
4	मीन	24:40:06
5	मेष	22:16:31
6	वृष	15:34:37
7	मिथुन	07:48:20
8	कर्क	12:53:54
9	सिंह	20:42:12
10	कन्या	24:40:06
11	तुला	22:16:31
12	वृश्चिक	15:34:37

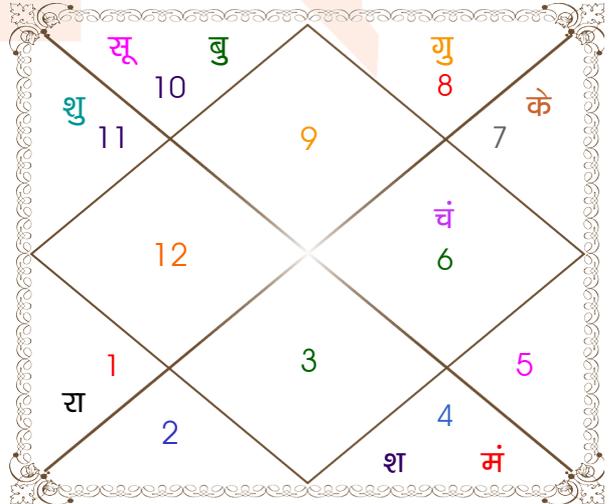
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



**Acharya Surender KumarJoshi**

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

## विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 0 वर्ष 9 मास 19 दिन

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
01/02/1948	20/11/1948	21/11/1966	21/11/1982	21/11/2001
20/11/1948	21/11/1966	21/11/1982	21/11/2001	21/11/2018
00/00/0000	राहु 04/08/1951	गुरु 08/01/1969	शनि 24/11/1985	बुध 18/04/2004
00/00/0000	गुरु 27/12/1953	शनि 22/07/1971	बुध 03/08/1988	केतु 16/04/2005
00/00/0000	शनि 02/11/1956	बुध 27/10/1973	केतु 12/09/1989	शुक्र 14/02/2008
00/00/0000	बुध 23/05/1959	केतु 03/10/1974	शुक्र 11/11/1992	सूर्य 21/12/2008
00/00/0000	केतु 09/06/1960	शुक्र 03/06/1977	सूर्य 24/10/1993	चंद्र 22/05/2010
00/00/0000	शुक्र 10/06/1963	सूर्य 22/03/1978	चंद्र 26/05/1995	मंगल 20/05/2011
01/02/1948	सूर्य 04/05/1964	चंद्र 22/07/1979	मंगल 03/07/1996	राहु 06/12/2013
सूर्य 21/04/1948	चंद्र 02/11/1965	मंगल 27/06/1980	राहु 10/05/1999	गुरु 13/03/2016
चंद्र 20/11/1948	मंगल 21/11/1966	राहु 21/11/1982	गुरु 21/11/2001	शनि 21/11/2018

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
21/11/2018	21/11/2025	21/11/2045	21/11/2051	21/11/2061
21/11/2025	21/11/2045	21/11/2051	21/11/2061	00/00/0000
केतु 19/04/2019	शुक्र 22/03/2029	सूर्य 10/03/2046	चंद्र 21/09/2052	मंगल 19/04/2062
शुक्र 18/06/2020	सूर्य 22/03/2030	चंद्र 09/09/2046	मंगल 22/04/2053	राहु 07/05/2063
सूर्य 24/10/2020	चंद्र 21/11/2031	मंगल 15/01/2047	राहु 22/10/2054	गुरु 12/04/2064
चंद्र 25/05/2021	मंगल 20/01/2033	राहु 10/12/2047	गुरु 21/02/2056	शनि 22/05/2065
मंगल 21/10/2021	राहु 21/01/2036	गुरु 27/09/2048	शनि 21/09/2057	बुध 19/05/2066
राहु 09/11/2022	गुरु 21/09/2038	शनि 09/09/2049	बुध 20/02/2059	केतु 15/10/2066
गुरु 16/10/2023	शनि 21/11/2041	बुध 16/07/2050	केतु 21/09/2059	शुक्र 16/12/2067
शनि 24/11/2024	बुध 21/09/2044	केतु 21/11/2050	शुक्र 22/05/2061	सूर्य 01/02/2068
बुध 21/11/2025	केतु 21/11/2045	शुक्र 21/11/2051	सूर्य 21/11/2061	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल मंगल 0 वर्ष 9 मा 24 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

**Acharya Surender Kumar Joshi**

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>शुक्र - शुक्र</b> 21/11/2025 22/03/2029	<b>शुक्र - सूर्य</b> 22/03/2029 22/03/2030	<b>शुक्र - चंद्र</b> 22/03/2030 21/11/2031	<b>शुक्र - मंगल</b> 21/11/2031 20/01/2033	<b>शुक्र - राहु</b> 20/01/2033 21/01/2036
शुक्र 12/06/2026 सूर्य 12/08/2026 चंद्र 21/11/2026 मंगल 31/01/2027 राहु 02/08/2027 गुरु 11/01/2028 शनि 22/07/2028 बुध 10/01/2029 केतु 22/03/2029	सूर्य 10/04/2029 चंद्र 10/05/2029 मंगल 31/05/2029 राहु 25/07/2029 गुरु 12/09/2029 शनि 09/11/2029 बुध 30/12/2029 केतु 21/01/2030 शुक्र 22/03/2030	चंद्र 12/05/2030 मंगल 17/06/2030 राहु 16/09/2030 गुरु 06/12/2030 शनि 13/03/2031 बुध 07/06/2031 केतु 12/07/2031 शुक्र 22/10/2031 सूर्य 21/11/2031	मंगल 16/12/2031 राहु 18/02/2032 गुरु 15/04/2032 शनि 21/06/2032 बुध 21/08/2032 केतु 15/09/2032 शुक्र 25/11/2032 सूर्य 16/12/2032 चंद्र 20/01/2033	राहु 04/07/2033 गुरु 27/11/2033 शनि 19/05/2034 बुध 22/10/2034 केतु 24/12/2034 शुक्र 25/06/2035 सूर्य 19/08/2035 चंद्र 18/11/2035 मंगल 21/01/2036
<b>शुक्र - गुरु</b> 21/01/2036 21/09/2038	<b>शुक्र - शनि</b> 21/09/2038 21/11/2041	<b>शुक्र - बुध</b> 21/11/2041 21/09/2044	<b>शुक्र - केतु</b> 21/09/2044 21/11/2045	<b>सूर्य - सूर्य</b> 21/11/2045 10/03/2046
गुरु 30/05/2036 शनि 31/10/2036 बुध 18/03/2037 केतु 14/05/2037 शुक्र 23/10/2037 सूर्य 11/12/2037 चंद्र 02/03/2038 मंगल 28/04/2038 राहु 21/09/2038	शनि 23/03/2039 बुध 03/09/2039 केतु 10/11/2039 शुक्र 20/05/2040 सूर्य 17/07/2040 चंद्र 22/10/2040 मंगल 28/12/2040 राहु 20/06/2041 गुरु 21/11/2041	बुध 16/04/2042 केतु 16/06/2042 शुक्र 05/12/2042 सूर्य 26/01/2043 चंद्र 22/04/2043 मंगल 22/06/2043 राहु 24/11/2043 गुरु 10/04/2044 शनि 21/09/2044	केतु 15/10/2044 शुक्र 25/12/2044 सूर्य 16/01/2045 चंद्र 20/02/2045 मंगल 17/03/2045 राहु 20/05/2045 गुरु 16/07/2045 शनि 21/09/2045 बुध 21/11/2045	सूर्य 26/11/2045 चंद्र 05/12/2045 मंगल 12/12/2045 राहु 28/12/2045 गुरु 12/01/2046 शनि 29/01/2046 बुध 14/02/2046 केतु 20/02/2046 शुक्र 10/03/2046
<b>सूर्य - चंद्र</b> 10/03/2046 09/09/2046	<b>सूर्य - मंगल</b> 09/09/2046 15/01/2047	<b>सूर्य - राहु</b> 15/01/2047 10/12/2047	<b>सूर्य - गुरु</b> 10/12/2047 27/09/2048	<b>सूर्य - शनि</b> 27/09/2048 09/09/2049
चंद्र 26/03/2046 मंगल 05/04/2046 राहु 03/05/2046 गुरु 27/05/2046 शनि 25/06/2046 बुध 21/07/2046 केतु 31/07/2046 शुक्र 31/08/2046 सूर्य 09/09/2046	मंगल 16/09/2046 राहु 06/10/2046 गुरु 23/10/2046 शनि 12/11/2046 बुध 30/11/2046 केतु 07/12/2046 शुक्र 29/12/2046 सूर्य 04/01/2047 चंद्र 15/01/2047	राहु 05/03/2047 गुरु 18/04/2047 शनि 09/06/2047 बुध 26/07/2047 केतु 14/08/2047 शुक्र 08/10/2047 सूर्य 24/10/2047 चंद्र 20/11/2047 मंगल 10/12/2047	गुरु 17/01/2048 शनि 04/03/2048 बुध 14/04/2048 केतु 01/05/2048 शुक्र 19/06/2048 सूर्य 03/07/2048 चंद्र 28/07/2048 मंगल 14/08/2048 राहु 27/09/2048	शनि 21/11/2048 बुध 09/01/2049 केतु 29/01/2049 शुक्र 28/03/2049 सूर्य 14/04/2049 चंद्र 13/05/2049 मंगल 02/06/2049 राहु 24/07/2049 गुरु 09/09/2049

**Acharya Surender Kumar Joshi**

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	1
भाग्यांक	7
मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 7
शत्रु अंक	3, 5, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मित्र राशि	मकर, मिथुन
मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
अनुकूल देवता	लक्ष्मी
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	माणिक्य
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

**Acharya Surender KumarJoshi**

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

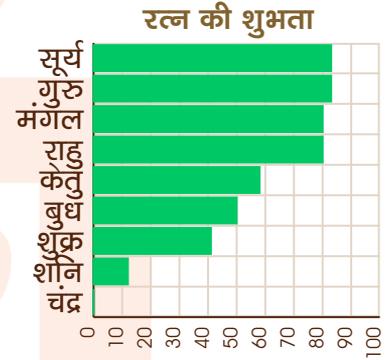
surenderjoshi70@gmail.com

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	83%	धन, भाग्योदय
पुखराज	गुरु	83%	कम खर्च, स्वास्थ्य, सुख
मूंगा	मंगल	80%	भाग्योदय, सन्तति सुख, कम खर्च
गोमेद	राहु	80%	सन्तति सुख, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	58%	धनार्जन, पराक्रम
पन्ना	बुध	50%	पराक्रम, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	41%	पराक्रम हानि, शत्रु व रोग, हानि
नीलम	शनि	12%	दुर्घटना, धन हानि, पराक्रम हानि
मोती	चंद्र	0%	हानि, दुर्घटना



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मंगल	20/11/1948	89%	12%	92%	25%	89%	41%	12%	67%	64%
राहु	21/11/1966	70%	0%	67%	50%	83%	52%	25%	92%	41%
गुरु	21/11/1982	89%	12%	86%	25%	95%	16%	12%	80%	58%
शनि	21/11/2001	70%	0%	67%	56%	83%	52%	38%	86%	41%
बुध	21/11/2018	89%	0%	80%	62%	83%	52%	12%	80%	58%
केतु	21/11/2025	70%	0%	86%	50%	83%	52%	0%	67%	70%
शुक्र	21/11/2045	70%	0%	80%	56%	83%	58%	25%	86%	64%
सूर्य	21/11/2051	95%	12%	86%	50%	89%	16%	0%	67%	41%
चंद्र	21/11/2061	89%	25%	80%	56%	83%	41%	12%	67%	41%

**Acharya Surender KumarJoshi**

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	20/09/1950-25/11/1952	24/04/1953-21/08/1953	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	25/11/1952-24/04/1953	21/08/1953-12/11/1955	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	12/11/1955-08/02/1958	02/06/1958-07/11/1958	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/02/1961-17/09/1961	08/10/1961-27/01/1964	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/04/1971-10/06/1973	-----	-----

### द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	04/11/1979-15/03/1980	27/07/1980-06/10/1982	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	06/10/1982-21/12/1984	01/06/1985-17/09/1985	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	21/12/1984-01/06/1985	17/09/1985-17/12/1987	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/03/1990-20/06/1990	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993
अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	-----

### तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-----

### शनि का ढैया फल

#### ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

#### फल

शुभ
शुभ
अशुभ
शुभ
शुभ

#### क्षेत्र

व्यावसाय
धनार्जन
व्यय
धन
शत्रु व रोग मुक्ति

**Acharya Surender KumarJoshi**

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

**Acharya Surender KumarJoshi**

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति नवम भाव में स्थित है। यह भाव भाग्य एवं धर्म का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप भाग्य पर अल्प मात्रा में ही विश्वास करेंगे तथा कर्म पर विशेष ध्यान देंगे। आपके विचार से कर्म के बिना भाग्य का उदय नहीं होता अतः अपने इस सिद्धांत से आप जीवन में कर्म के द्वारा उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही धर्म के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा धार्मिक कार्य कलापों एवं तीर्थ स्थानों की यात्रा आदि को भी कम ही करेंगे। आयु के साथ साथ आप जीवन में इनके महत्व को भी अवश्य स्वीकार करेंगे। आपको समाज में विशिष्ट सम्मान भी प्राप्त होगा लेकिन इसमें विलम्ब हो सकता है। आप एक पराकमी एवं उत्साही व्यक्ति हैं अतः आपको इस ओर से कोई चिन्ता नहीं होगी।

नवम भाव से द्वादश भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक रहेगा साथ ही शुभाशुभ कार्यों पर आप व्यय करेंगे। जमीन जायदाद पर अधिक से अधिक व्यय करने के इच्छुक रहेंगे इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ की प्राप्ति हो सकती है। यद्यपि इसके प्रभाव से जीवन में अनावश्यक विघ्न बाधाएं भी आएंगी परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही दाम्पत्य जीवन का आप सुख पूर्वक उपभोग करेंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके पराकम में वृद्धि होगी तथा समाज में सभी लोग आपके पराकम से प्रभावित रहेंगे जिससे आपको इच्छित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही भाई बहनों का भी न्यूनाधिक सहयोग मिलता रहेगा। चतुर्थ भाव पर इसकी दृष्टि के प्रभाव से आप जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से युक्त रहेंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य सांसारिक सुख संसाधनों की भी आपको परिश्रम पूर्वक प्राप्ति होगी परन्तु माता का सुख एवं स्वास्थ्य मध्यम रहेगा।

**Acharya Surender KumarJoshi**

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

इस प्रकार मंगल के इस प्रभाव से आप कर्म योगी रहेंगे तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करके भाग्योदय करेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जन भी आपसे सन्तुष्ट रहेंगे। आप भी उचित रूप से उनका लालन पालन करेंगे। साथ ही आपसी संबंधों में मधुरता भी बनी रहेगी।



**Acharya Surender KumarJoshi**

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

**Acharya Surender KumarJoshi**

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- पंचम भाव में राहु स्थित है एवं शनि से दृष्ट है।
- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में सूर्य, मंगल और राहु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुण्डली में राहु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ शनिवार गाय को सवा

**Acharya Surender KumarJoshi**

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

पांच किलो जौ सवा किलो गुड़ में मिलाकर खिलाना चाहिए। सूखे गोले में पंजीरी भरकर काले कपड़े में लपेटकर किसी सुनसान जगह पर मिट्टी में दबाएं। कबूतरों को दाना, चींटी को आटा तथा मछलियों को आटे की गोली बनाकर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

### नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

## ग्रह फल

### सूर्य

द्वितीय भाव में सूर्य हो तो जातक भाग्यवान्, सम्पत्तिवान्, मुखरोगी, झगड़ालू, नेत्रकर्णदन्तरोगी, राजभीरु, घरेलू जीवन दुःखी एवं स्त्री के लिए कुटुम्बियों से झगड़ने वाला होता है।

मकर राशि में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा अल्प मात्रा में शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति होती रहेगी। आपके प्रति उनका प्रेम भाव रहेगा तथा विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही वे समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप भी उनका हार्दिक सम्मान तथा आदर करेंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। उनकी आज्ञा का पालन करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेद होने से विवाद आदि की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय पश्चात सब कुछ ही ठीक हो जाएगा।

### चन्द्र

ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक गुणी, चंचलबुद्धि, सन्तति और सम्पत्ति से युक्त, सुखी, यशस्वी, लोकप्रिय, दीर्घायु, मन्त्रज्ञ, परदेशप्रिय एवं राज्यकार्यदक्ष होता है।

तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति एकादश भाव में है। अतः माता के आप सदैव प्रिय रहेंगे एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहेंगे। जीवन में आपकी उन्नति एवं समृद्धि के लिए सदैव आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उन्हीं के सहयोग से आप अपने आय साधनों की वृद्धि करने में सफल हो सकेंगे। इस प्रकार जीवन के समस्त महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आपको नित्य धन लाभ होता रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन करना एवं उनकी सेवा करना आप अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही स्नेहपूर्ण रहेंगे एवं उनमें मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। इस प्रकार आप परस्पर एक दूसरे के लिए शुभ रहेंगे।

## मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

सिंह राशि में मंगल हो तो जातक शूरवीर, सदाचारी, कार्यनिपुण, स्नेहशील, परोपकारी, ज्योतिषी, गणितज्ञ, माता-पिता का आज्ञाकारी, गुरुजनों का आदर करने वाला, उदार एवं सफल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

## बुध

तृतीयभाव में बुध हो तो जातक सद्गुणी, कार्यदक्ष, परिश्रमी, मित्रप्रेमी, भीरु, धर्मात्मा, यात्राशील, व्यवसायी, चंचल, अल्पभातृवान्, विलासी, सन्ततिवान्, कवि, सम्पादक, सामुद्रिकशास्त्र का ज्ञाता एवं लेखक होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

## गुरु

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

वृश्चिक राशि में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, राजमन्त्री, कार्यकुशल, सुगठित शरीर, अपनी उच्चता का दिखावा करने वाला, स्वार्थी, निर्बलस्वास्थ्य, दुःखी एवं कामुक होता है।

## शुक्र

तृतीय भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, कलाकार, आलसी, कृपण, धनी, सुखी, पराकमी, भाग्यवान्, बहने भाईयों से अधिक एवं पर्यटनशील होता है।

कुम्भ राशि में शुक्र हो तो जातक शान्तिप्रिय, दूसरों को सहायता करने वाला, सच्चरित्र, सुन्दर, लोकप्रिय, चिन्ताशील एवं रोग से सन्तप्त होता है।

## शनि

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

कर्क राशि में शनि हो तो जातक, गरीब, कमसन्तान, बाल्यावस्था में दुखी, मातृरहित, प्राज्ञ, उन्नतिशील, विद्वान्, हठी एवं स्वार्थी होता है।

## राहु

पंचम भाव में राहु हो तो जातक शास्त्रप्रिय, कार्यकर्ता, भाग्यवान्, उदररोगी, मतिमन्द, कुल धननाशक, धनहीन, नीतिदक्ष एवं सन्तान के लिए अशुभ होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक-पराकमहीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

## केतु

ग्यारहवें भाव में केतु हो तो जातक बुद्धिहीन, निजका हानिकर्ता, अरिष्टनाशक एवं वातरोगी होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कुष्ठरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।

## दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र  
( 21/11/2025 - 21/11/2045 )

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 21/11/2025 को आरम्भ होकर 21/11/2045 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में शुक्र तृतीय भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है जिसकी सामान्यतया दो राशियाँ- बृष और तुला हैं। यह मीन राशि में उच्च का तथा कन्या राशि में निम्न का होता है। यह आनन्द, प्रेम-संबंध, स्वाद, फैशन डिजाइनिंग तथा जीवन के आनन्द का द्योतक है। यह आपकी कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है तथा नवम भाव पर इसकी दृष्टि है और इस भाव पर अपना शुभ प्रभाव डाल रहा है।

तृतीय भाव मानसिकता, बुद्धि, साहस, दृढ़ता, छोटे भाई-बहनों, छोटी यात्रा, गमनागमन, पत्राचार, अफवाह, हाथ, गले, कन्धों, हँसली तथा स्नायु तंत्र का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

तृतीय भाव में स्थित महादशा स्वामी शुक्र भाव को प्रबलित कर रहा है और इसके फलस्वरूप स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करने में साहस की प्राप्ति होगी। आपको कोई बड़ी या मामूली स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी और इस दशा के दौरान आपका जीवन सामान्य रहेगा।

अर्थ-संपत्ति :

शुक्र के कारण आपको समृद्धि तथा संपत्ति की प्राप्ति होगी और आपमें कठिनाइयों का सामना करने का साहस उत्पन्न होगा। इस दशा के दौरान आपको कुछ अचल संपत्ति प्राप्त होने की संभावना है और आप भोग-विलास तथा आराम संबंधी वस्तुओं पर व्यय करेंगे। आपको उपलब्धियों की प्राप्ति और संपत्ति की वृद्धि में बाधा आएगी तथा आपके ऊपर ऋण का बोझ पड़ सकता है या नुकसान हो सकता है जिसके लिए आपको आवश्यक सावधानी बरतनी चाहिए।

व्यवसाय :

आपकी मानसिक शक्ति अच्छी है इसलिए आप संगीत, गायन, नृत्य और ललित कला का आनन्द लेंगे। आप नाटकीय गतिविधियों या ललित कला से संबंधित गतिविधियों से धनोपार्जन और जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे। आप व्यावसायिक दृष्टि से सुदृढ़ हैं और अपने पिता के व्यवसाय में शामिल हो सकते हैं क्योंकि आपकी जन्म कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित शुक्र की दृष्टि नवम् भाव पर है।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सौहार्द्रपूर्ण होगा क्योंकि आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे। आपको बड़ों का आशीर्वाद मिलेगा किन्तु अपने भाई-बहनों के साथ मतभेद भी

**Acharya Surender KumarJoshi**

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

हो सकता है जिससे परिवार में तनाव उत्पन्न होगा।



**Acharya Surender KumarJoshi**

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

**अंतर्दशा :- शुक्र - शुक्र  
( 21/11/2025 - 22/03/2029 )**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 21/11/2025 को प्रारंभ होकर 21/11/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 4 मास की होगी। आपके लिए यह 21/11/2025 को प्रारंभ होकर 22/03/2029 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है।

शुक्र शुभ ग्रह है। तृतीय भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के 9वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी मानसिक क्षमता उत्तम होगी, मगर शरीर कमजोर हो सकता है। कला ओर संगीत में रुचि होगी, रोमांटिक होंगे। आर्थिक स्थिति मध्यम हो सकती है। किसी कांड में फंसने से बचाव करें।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

- चींटियों को चीनी और आटा खिलाएं।
- कन्याओं को खीर खिलाएं।
- लक्ष्मीजी की उपासना करें।
- भोजन की पहली रोटी गाय को खिलाएं।

**अंतर्दशा :- शुक्र - सूर्य  
( 22/03/2029 - 22/03/2030 )**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 21/11/2025 को प्रारंभ होकर 21/11/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 1 वर्ष की होगी जो 22/03/2029 को प्रारंभ होकर 22/03/2030 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है। द्वितीय भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी पत्रिका के अष्टम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उस पर अपना प्रभाव पहुंचा रहा है।

इस अवधि में आप उदास रह सकते हैं, चेहरा बीमार सा रह सकता है। अधिकारीवर्ग को रुष्ट न करें, अन्यथा हानि होगी। परिश्रम से धनागम होगा। आपके जिद्दी स्वभाव के कारण अचल संपत्ति को हानि पहुंच सकती है। इस कठिन समय में सावधान रहना आवश्यक है।

अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य के तांत्रिक मंत्र का जाप 28000 बार करें। प्रतिदिन सूर्योदय के समय नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।

**Acharya Surender KumarJoshi**

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com

**अंतर्दशा :- शुक्र - चन्द्र  
( 22/03/2030 - 21/11/2031 )**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 21/11/2025 को प्रारंभ हुई थी और 21/11/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास की होगी जो आपके लिए 22/03/2030 से प्रारंभ होकर 21/11/2031 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है।

चंद्रमा मस्तिष्क और माता का कारक है।

एकादश भाव में स्थित होकर चंद्रमा कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति करेंगे। समाज में सम्मान मिलेगा, लोकप्रिय बनेंगे। समाजसेवा और दान आदि में रुचि होगी। सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। विद्वान बनेंगे, नम्र व्यवहार होगा।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें। शाम को चंद्रोदय के समय चंद्र को चंद्र मंत्र पढ़ते हुए दूध अर्पित करें।

**Acharya Surender KumarJoshi**

VPO CHAKSARAI DISTT UNA HIMACHAL PRADESH

9418407130

surenderjoshi70@gmail.com